NEW HORIZON SCHOOL

SESSION 2018- 2019

Periodic 1 / Term - 1

CLASS: V

SUBJECT – HINDI

NAME : _____

ROLL NO. : _____

SECTION : _____

पाठ 1

भारत देश महान है

प्रकृति ने भारत भूमि को स्वयं अपने हाथों से सँवारा है। भरतीय बड़े गर्व के साथ कहते हैं। मेरा देश महान। कविता में भारत की भौगोलिक और प्राकृतिक स्थिति को प्रस्तुत किया गया है साथ ही इसकी परंपरा और महानता का भी वर्णन किया गया है। भारत की शान देखते हुए भरत को "धरती का स्वर्ग" भी कहा गया है। कविता मे भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत दक्षिण में हिंद महासागर पूर्व में बंगाल की खाड़ी एंव पश्चिम में अरब सागर के बारे में बताया गया है। कविता में भारत के वन, उपवन, गगन, पवन, आमों के बगीचे, कोयल का मीठा गान, फसलो व भारत मे जन्में महापुरुषो का भी उल्लेख किया गया है। जो भारत देश को महान बनाते है।

पाठ 2

घाघ और भेडुरी

पाठ के अंतर्गत ऐसे महापंडित व ज्योतिषी का उल्लेख किया गया है जो पशु-पक्षियों के व्यवहार को देखकर मौसम की भविष्यवाणी कर सकते थे। ऐसे ही एक महापंडित थे घाघ जो पशु पक्षियों की चाल-ढ़ाल देखकर बता देते थे कि वर्षा होगी या नही अपनी विदया के आधार पर वे देश में अकाल या सुकाल की भविष्यवाणी भी कर देते थे। अपनी जन्म भूमि पर उन्हे वह मान सम्मान नही मिलता था जो उन्हे मिलना चाहिए अतः दुखी होकर वह धारा नगरी चले जाते है वहाँ के राजा भोज गुणी लोगो का बहुत सम्मान करते थे उन्होने घाघ को राज ज्योतिषी का पद देकर अपने यहाँ रख लिया। एक दिन राजा ने अपने सभी दरबारियो से वर्षा का अनुमान लगाने को कहा, सबने अपनी अपनी पोथी-पत्री देखकर बताया कि वर्षा का

कोई योग नही है और आने वाले समय में भयंकर अकाल पड़ने की संभावना है

घाघ ने प्रकृति और आसमान को देखकर अनुमान लगाया कि वर्षा का योग बनता है घाघ ने राजा से एक दिन की मोहतत माँगी। घाघ एक बार फिर पशु पक्षियों की चाल-ढ़ाल और बोली को ठीक से परखना चाहता था। जंगल में गधे के लटके कान, चींटियों का अपने मुँह में अन्न के कण दबाए तेज़ी से अपनी बाँबी की ओर बढ़ना, चिड़ियों का धूल में नहाना और चीलों का झुंड बनाकर आकाश की ओर बढ़ना सभी ये संकेत दे रहे थे कि वर्षा अवश्य होगी। घाघ के मन का संशय तब पूरी तरह

से खतम हो गया जब उन्होनें भेडुरी को यह कहते सुना कि टि टहरी अपने अंडों को उठाकर दूसरी जगह ले जा रही है उसकी तेज आवाज़ वर्षा का सूचक थी। घाघ ने पूरे विश्वास के साथ राजा को बताया कि वर्षा अवश्य होगी। थोड़ी ही देर बाद तेज़

वर्षा होने पर सभी लोग खुश हो उठे, घाघ ने कहा-पशु पक्षी ऐसे यंत्र है जो कभी झूठे नही हो सकते।

घाघ ने भेडुरी से विवाह कर लिया। आज भी उनके ऋतु संबंधी दोहे और सूक्तियाँ सहित्य में पढ़कर पाठक विभोर हो जाते है।

पाठ 3

सच्चा दोस्त

पाठ के द्वारा बच्चों को भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु के नाम व काम से परिचित कराया गया है।

पाठ के अंतर्गत प० जवाहरलाल नेहरु का बच्चों के प्रति प्रेम दशयिा गया है। पाठ में यह बताने की कोशिश की गई है कि बड़े लोगो की महानता छोटी -छोटी बातों से मुखरित होती है। व्यक्ति महान अपने पद से नही बल्कि व्यवहार से बनता है। प्यार से बच्चे जवाहरलाल नेहरु जी को चाचा नेहरु कहकर पुकारते थे इनका जन्म बाल दिवस के रुप में मनाया जाता है। नेहरु जी को बच्चों के साथ खेलना, मज़ाक करना बहुत अच्छा लगता था। बच्चों के साथ प० जवाहरलाल नेहरु जी का बड़ा आत्मीयता का संबध था। एक बार नेहरु जी आनंद भवन में बच्चो से मिले उन्होने बच्चो से कई

प्रश्न पूछे जैसे कि तुम सब कैसे हो? सब मन लगाकर पढ़ रहे हो? तुम लोग क्या खेलते हो आदि।

नेहरु जी ने प्रकृति के प्रति अपना प्रेम भी दशयिा तथा तितली की तुलना इंद्रधनुष से की। बच्चों को उन्होने पढ़ाई के साथ-साथ खेलने की भी सलाह दी। चाचा नहरु के पूछने पर बच्चों ने उन्हे बताया कि वर्षा के मौसम में स्कूल जाते समय उनका बस्ता और किताबें भीग जाती हैं, मगर बारिश में बच्चों को भीगना भी बहुत पसंद है बच्चों की इस तकलीफ को सुनकर नेहरु जी ने उन सबको प्यार किया और उनसे विदा ली। समय बीतता गया बच्चों ने सोचा चाचा नेहरु बहुत व्यस्त रहते हैं शायद अब तक उनकी बात भूल गए होगें और तभी एक दिन प्रधानमंत्री के दफतर से एक पार्सल बच्चों के लिए आया उसमें दो दर्जन बरसातियाँ थी। अपने प्रति चाचा नेहरु जी का ये प्रेम देखकर सभी बच्चे बहुत खुश थे।

पाठ 4

बातचीत का असली मज़ा

बातचीत एक कला है। इस कला को जो जितना सीखता है, जीवन में उतना ही अधिक सफल होता है। पाठ में पिता (लॉर्ड चेस्टरफील्ड) पुत्र को बातचीत करने का सही ढ़ग सिखाते हुए कहते है कि हमेशा अच्छे लोगो के साथ रहा करो। बातें करो मगर कम, इससे आप दूसरों को नाराज़ नही करेंगें क्योकि ज़्यादा बाते करने पर कोई न कोई ऐसी बात हो जाती है कि दूसरे आपसे नाराज़ हो जाते हैं। बातचीत करते समय ज़्यादा कहानियाँ मत सुनाओ इससे लोग बोर हो जाते है। उदाहरण भी छोटे और सटीक होने चाहिए। बातचीत दो तरफा होनी चाहिए, एक बोलता ही जाए और एक सुनता ही जाए ऐसा करना असभ्य लगता है। अगर कोई बातूनी तुम्हे पकड़ ले तो उसकी बात भी ध्यान से सुनो या अभिनयकरो कि तुम उसकी बात ध्यान से सुन रहे हो। बातचीत के दौरान गरमा

गरमी से बचो जहाँ तक हो सके अपनी निजी बात किसी से न करो। आधी बात कहने से और आधी बात छिपाने से हम लोगों का विश्वास खत्म कर देते हैं। चुगलखोरी और दूसरों की निंदा करने से बचो ऐसा करने से हम दूसरों का चरित्र हनन करते है।

जीवन में तरह-तरह के लोगो से वास्ता पड़ता है सबको एक ही लाठी से मत हाँकों छोटे बड़ो का ध्यान रखो। ऐसे लोगों से बचो जो बातचीत में कसमें खाने लगते है इसमे बड़ी असभ्यता कोई नहीं। कुछ भी बोलो या कहो सब सौम्य और शालीन होना चाहिए मुख पर ऐसा भाव रचो जैसे पौधों पर फूल रचते हैं।

पाठ 5 स्वावलंबन

ईश्वर उनकी सहायता करता हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। प्रस्तुत एकांकी में हम एक ऐसे बालक के बारे मे जानेगें जो समाज सेवक ईश्वर चंद्र विद्रयासागर का सहारा पाकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। ईश्वर चंद्र विदयासागर एक ऐसे बालक को देखते हैं जो भीख माँग रहा है पूछने पर बालक बताता है कि उसके पिता मर चुके हैं और माँ बहुत बीमार है। बालक बहुत छोटा है और कोई काम करना नही जानता इसीलिए उसे भीख माँगनी पड़ रही है।

विद्रयासागर उससे प्रश्न करते है कि अगर वह उसे पैसे देंगे तो वह क्या करेगा बच्चा बड़ी समझदारी से जवाब देता है। खुश होकर विद्रयासागर उसे एक रुपया देते है।

पाँच साल बाद वही लड़का विद्रयासागर जी के पैरों में गिरकर उनको प्रणाम करता है। और उन्हे अपनी खुद की दुकान में ले जाता है और बड़े आदर सत्कार के साथ उन्हे कुरसी पर बिठाता है और याद दिलाता है कि उनके दिए गए एक रुपए से मेहनत करके उसने अपनी एक दुकान खोली और अब वह अपनी माँ के साथ बहुत सुख से रहता है। विद्रयासागर जी उसकी मेहनत को सराहते हुए उसे पढ़ने को भी कहते हैं और उसे आशीर्वाद देते है।

कविता 6 नई लगन

जीवन में सभी सफल होना चहते है। लेकिन सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना ज़रुरी है। जैसे की कविता में भी कहा गया है कि

पा लोगो जब मंज़िल अपनी
होगा तुमको ही सुख ना
किंतु शर्त है एक, न बैठो
पल भर न विश्राम करो
नव जीवन उत्साह नया हो
नई लगन से काम करो।

इस प्रेरणादायक कविता मे लगन और उत्साह से कार्य करने की बात कही गई है

नई उमंगें नई तरंगे
लिए बढ़ो कुछ नाम करो
नव जीवन उत्साह ना हो
नई लगन से काम करो

कविता के माध्यम से विददयार्थियों मे उत्साह का संचार करते हुए उन्हे कदम - कदम पर मेहनत कर आगे बढ़ने को प्रेरित किया गया है।

पाठ 8 बड़ा कौन है

बड़ा कौन है ? यह प्रश्न देखने में तो बहुत आसान है, मगर इसका उत्तर देना बहुत कठिन है। जैसा कि कविता में भी कहा है

जो हाथी पर सवार है वो बड़ा है या जो चतुराई से अपनी भूल दूसरो पर मढ़ देता है वो बड़ा है।

बड़ी- बड़ी बातें करने वाला बड़ा है या बडे -बडे काम करके चुप रहने वाला बड़ा है

बड़ा वही है जो सेवा करता है

सूरज ऊचाई पर रहने की वजह से बड़ा नही है, वह रोशनी देता है इसीलिए बड़ा है।

प्रतुत कविता में कवि तरह - तरह के लोगों का उदाहरण देकर पूछना चाहता है कि बड़ा कौन है।

This document was created with Win2PDF available at http://www.win2pdf.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.
This page will not be added after purchasing Win2PDF.